आंतर - भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
अॅड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंध संपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी - 413 522 (महा.)
ईमेल-antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी - विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल-editorbabuji@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्य संपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
गंगाधर घुमाडे • ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बाराव • मुकुंद कुलकर्णी • मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य • गोपाल सत्पुरे

मुखपृष्ठ छायाचित्र - इंटरनेट से, छायाचित्र - नरेंद्र भाई

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा **साईराम ग्राफीक्स**, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में...

संपादकीय -	भारत पुनः ''जातियों का पागलख़ाना'' न बन जाए	५
आंतर भारती - १	तुका म्हणे	६
आंतर भारती - २	बसव वचन	८
आंतर भारती - ३	तिरुवल्लुवर वाणी	९
काव्य भारती - १	पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल	१०
काव्य भारती - २	दोहा सलिला	११
कथा भारती - १	संघर्ष और सफलता की गाथा बराक ओबामा	१२
श्रद्धांजली - १	डॉ.शैला लोहिया	१६
श्रद्धांजली - २	जीवनव्रती - ठाकुरदासजी बंग	१७
विशेष आलेख -१	वन के लाभ ग्रामीणों को	१८
विशेष आलेख -२	वैदिक-साहित्य में जल-संरक्षण एवं प्रबंधन	२०
चिंतन भारती -१	वैदिक-समीक्षा	२५
श्रद्धांजली - ३	श्री रंगजी वरेरकर	२८
समाचार भारती-१	जयपुर शिविर का अहवाल	३१

हमारा ई-मेल का पता

e-mail : antarbharati.patrika@gmail.com
raavas@rediffmail.com

लेख इस ई-मेल पर भी भेजे जा सकते हैं

आंतर भारती पत्रिका के ग्राहक बने / बनाएँ

संपादकीय...

भारत पुनः ''जातियों का पागलख़ाना'' न बन जाए

आधुनिकता की आंधी से प्रभावित होकर, सांस्कृतिक विरासत को ठेस पहुँचाने वालों के विरुद्ध कई आवाजें उठती रही हैं, मगर भूमंडलीकृत दुनिया का प्रभाव इतना गहरा है कि मानवीय सभ्यता पर भी इसके गहरे दाग़ पड़ने लगे हैं. वैसे दुनिया के लिए चिंतन व आध्यात्मिक ज्ञानमय आदर्श से 'विश्व गुरु' कहलाने के लिए सक्षम भारत में एक बड़ी विडंबना बन गई थी अमानवीय अस्पृश्यता - ऐसे ग़ैर इन्सानियत की क़रतूतों से समाज को मुक्ति दिलाने की कोशिशें कई तरह से होती रहीं. इस भेदभाव को दूरकर विभक्त व संत्रस्त वर्गों के उद्धार के प्रयास के रूप में भारतीय संविधान में जो भी व्यवस्था की गई थी, वह निश्चय ही महत्वपूर्ण थी. मगर समाज की रीति-नीति नियंत्रित और नेतृत्व संचालन में संलग्न कुछ संकुचित स्वार्थपूर्ण ताक़तों के रवैये ने आज ऐसी स्थिति उत्पन्न की है कि तथाकथित 'जाति', सामाजिक व राजनीतिक अस्तित्व का अस्त्र साबित होने लगा है. इससे उत्पन्न होनेवाले परिणाम मानवीय संस्कृति के हित में हों, यह ज़रूरी नहीं है. क्योंकि इनमें स्वार्थपूर्ण भ्रष्ट कुटिलता निहित है.

केरल में एक समय जातियों की समस्या, छुआछूत का प्रकोप हो जाने पर स्वामी विवेकानंद ने उसे ''जातियों का पागलख़ाना'' की संज्ञा दी थी. मगर कालांतर में वहाँ की स्थिति कुछ हद तक बदल गई है, जबकि आज इस संज्ञा के लिए समूचा भारत ही योग्य होने के कगार पर है. आर्थिक व सामाजिक रूप में तथाकथित पिछड़े वर्गों, जातियों, जनजातियों के हित में जो भी प्रावधान किए गए हैं, उनसे 'जाति' की पहचान हटने की जगह आधुनिक समय में सुदृढ़ हो जाना दर्दनाक है. साहित्यिक विमर्श, शासनिक रीति-नीतियाँ भी आज इस दायरे में इस भाँति फंस गई है कि 'जाति' को अस्त्र बनाकर नंगे नाच करनेवाली भ्रष्ट

ताक़तों के लिए यह स्थिति वरदान साबित हो रही है. इन स्थितियों के कई परिणाम देश के कई प्रदेशों में सामने आने की ख़बरें हर दिन अख़बारों में प्रकाशित हो रही हैं और इन पर रोक के लिए अदालत भी निर्देश जारी करने की नौबत पैदा हो गई है. साहित्यिक विमर्शों में हित गायब होकर स्वार्थ के जमते समय वर्ग मिटकर मानवीय चेतना कायम होना जटिल प्रक्रिया है. बुद्धिजीवियों, राष्ट्र हित चाहने वाले आदर्श नेताओं की यह सामाजिक व नैतिक जिम्मेदारी है कि भारत के ऊँचे आदर्शों को कायम रखने के लिए हमारे समाज से 'जाति' के दाग को मिटाने के लिए मनसा-वाचा-कर्मणा विवेकपूर्ण कदम उठाएं व समूचे राष्ट्र में मानवीय व्यवहार व दूसरों के लिए भी आदर्श बन जाएं. समाज को जातियों में विभक्त करनेवाली स्वार्थी शक्तियों के प्रति इन्सानियत की शांतिपूर्ण लड़ाई तुरंत शुरु हो जाए.

रमजान पर्व, स्वतंत्रता दिवस तथा जन्माष्टमी की हार्दिक मंगलकामनाओं सहित...

- डॉ.सी.जय शंकरु बाबु

आंतर भारती - १

तुकाम्हणे

(मराठी)

गति अधोगति मनाची युक्ति

गति अधोगति मनाची युक्ति ।
मन लावीं एकांतीं साधुसंगे ॥ध्रु॥
जतन करा जतन करा ।
धांवतें सैरा औढाळ तें ॥१॥
मान अपमान मनाचें लक्षण ।
लाविलिया ध्यान तें चि करी ॥२॥
तुका म्हणे मन उतरी भवसिंधु ।
मन करी बंधु चौऱ्याशीचा ॥३॥

हिन्दी भावानुवाद :

'मन सहाय है, बंधु है वही'

प्रगति हो अथवा हो अधोगति, मन के कारण दोनों की स्थिति ।
इसीलिए मन लाओ बस में, इसे लगाओ सत्संगति में ॥१॥
रोको इसको, टोको इसको, भटकाये-खींचेगा तुमको ॥२॥
हों अपमान, मान का अवसर, दोनों ही आश्रित हैं मन पर ।
इसे लगाओगे जिस धुन में, मगन रहेगा उसी ध्यान में ॥३॥
तुका कहे मन ही साधन है, भवसागर में यह तरणी है ।
मन सहाय है, बंधु है वही, चौरास्सी भटकाये भी वही ॥४॥

हिन्दी : प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार
परिमल २८/८१, विद्या नगर, उस्मानाबाद (महा.).

English Translation

The mind runs amuck
Gati adhogati manaachi he yukti

The mind tricks man to rise or fall.
The mind should be attached to a Saint, in solitude.
The mind runs amuck and needs to be controlled.

Prestige and disgrace are all games of the mind.
Concentrate on the Lord without flinching.

Prays TUKA, please take me across the ocean of life
Please help my mind befriend the eighty four cycles of birth and death.

English : D.S.VAJRAM
3, Praram, Lakaki Rasta, Pune - 411016

आंतर भारती - २

बसव वचन

मूल कन्नड वचन -

अत्तलित होगदंते हेळवन माडय्य तंदे
सुत्ति सुळिदु नोडवंते अंधकन माडय्य तंदे
मत्रोंद केळदंते किवुडन माडय्य तंदे
निम्म शरणर पादवल्लदे अन्य विषयक्केळेसदंते
इरिसि कूडल संगमदेव

हिंदी काव्यानुवाद :-

इधर उधर जा न पाऊँ ऐसा पंगू बनाओ
अन्य किसी को देख न पाऊँ ऐसा अंधा बनाओ
और कुछ सुन न पाऊँ ऐसा बहिरा बना दें
शरणों के चरणों को छोड मेरा मन कहीं न
जा पाए ऐसा करो कूडल संगम देव

भाष्य -

सत्संग का महत्व हर संप्रदाय के संतों, शरणों, दासों ने अपनी रचनाओं में बतलाया है. सतसंग अर्थात् जिनके साथ रहने से हानि नहीं होती. लाभ ही लाभ होता है. लाभ भौतिक नहीं, अभौतिक, आध्यात्मिक. जहाँ लाभ और हानि का विचार मन को स्पर्श नहीं करता वही सतसंग है. ऐसे संतों के चरणों में मेरा मन लगा रहे. इस मन को लुभाने वाली दुनियाभर की चीजें हैं, उनकी ओर मेरा मन जा पाए ऐसा मुझे बना दे.

मैं इधर उधर जा न पाऊँ ऐसा पंगु बना दे. आँखें मात्र शरणों के चरणों में लगी रहे. उन्हें छोड़ लुभानेवाले ललचानेवाले दृश्य देख न पाएँ ऐसा अंधा बना दे. कानों से शरणों के वचनों को छोड कुछ न सुन सकें ऐसा बहिरा बना दे. इस में शरणों के संग का महत्व प्रतिपादित किया है.

- डॉ.इरेश सदाशिव स्वामी
- 'विद्या', १२, ब्रह्मचैतन्य नगर, बिजापूर रस्ता, सोलापुर - ४१३००४
०२१७-२३४२१९४, ०९३७१०९९५००

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिलमूल - संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हाइकु अनुवाद -
डॉ.सी.जय शंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)
अध्याय ४. अऱन् वलियुरूत्तल (धर्म महिमा)

अळुक्कारु अवावेहुळि इन्नाचोल् नान्गुम्
इळुक्का इयन्ऱ़ु अऱ़म् । (कुरल ३५)

न हो कटुता,
ईष्या, लोभ व क्रोध
वही सुधर्म ।

भावार्थ - हमारे बचनों में कटुता, आचरण में ईर्श्या, लोभ व क्रोध नहीं होना चाहिए ।

अन्ऱ़िवाम् एन्नादु अऱ़्चेय्ह मट्रदु
पोन्ऱ़ुङ्गाल पोन्ऱ़ात् तुणै । (कुरल - ३६)

सत्कर्म अभी
करें, साथी है धर्म
अंत काल भी ।

भावार्थ - सत्कर्म इसी पल पर करें, यही उसके लिए सही समय है. सदा सत्कर्म करते रहें, वही सुधर्म है और अंतकाल का साथी भी वही है.

पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल

- टी.ई.एस.राघवन

चित्तौड़गढ

झरने झीलें कुंड हैं चितौड़ में अनेक ।
'विजय स्तंभ' स्थापत्य का उदाहरण है एक ॥
कीर्ति स्तंभ के निकट मंदिर भी है जैन ।
आटोरिक्शा उपलब्ध, बस-सुविधा दिनरैन ॥
रानीमणि पद्मिनी की त्याग भूमि चित्तौड़ ।
माता पन्नाधाय की सुतबलिभू चित्तौड़ ॥
'सिटी पैलेस' राजगृह, इतिहास का प्रतीक ।
कपड़े चमडे आदि की भेंटों का हि प्रतीक ॥
सावा में 'रव्वाजा बाग' है सच मुच रमनीय ।
गुलाब, घोड़े यहाँ के तृणादि सुदर्शनीय ॥

उदयपुर

'झीलों की नगरी' उदयपुर, जगमें है विरव्यात ।
'राजस्थान कश्मीर' से, यह पुर है विरव्यात ॥
हल्दी 'घाटी' रणभूमि, ऐतिहासिक प्रसिद्ध ।
'जगमंदिर' औ 'जगमहल' ऐतिहासिक प्रसिद्ध ॥
दर्शनीय थल है यहाँ, 'फतेह सागर' झील ।
लखने लायक थल यहाँ, 'जयसमंद' है झील ॥
'सिटी पैलेस' राजमहल, इतिहास का प्रतीक ।
कपड़े चमड़े आदि की, भेंटों का ही प्रतीक ॥
'दूध तलाई पार्क' है, तथा पिछोला झील ।
तथैव 'गुलाब बाग' है, यहाँ वहाँ है झील ॥
उदयपुर - निकट ईश का मंदिर विराजमान ।
श्रीनाथजी का सुन्दर मंदिर भी द्युतिमान ॥

- १, हनुमंतरायन मंदिर गली,
चेन्नई - ६००००५.

दोहा सलिला

लोकतंत्र

- आचार्य संजीव सलिल

लोक तंत्र की मांग है, ताकतवर हो लोक ।
तंत्र भार हो लोक पर, तो निश्चय हो शोक ॥
लोभ तंत्र ने रख लिया, लोक तंत्र का वेश ।
शोक तंत्र की जड़ जमी, कर दूषित परिवेश ॥
क्या कहता है लोक-मत, सुन-समझे सरकार ।
तदनुसार जन-नीति हो, सभी करें स्वीकार ॥
लोक तंत्र में लोक की, तंत्र न सुनाता पीर ।
रुग्ण व्यवस्था बदल दे, क्यों हो लोक अधीर ॥
लोक तंत्र को दे सके, लोक-सूर्य आलोक ।
जन प्रतिनिधि हों चन्द्र तो, जगमग हो भू लोक ॥

प्रजातंत्र

प्रजातंत्र है प्रजा का, प्रजा हेतु उपहार ।
सृजा प्रजा ने ही इसे, करने निज उपकार ॥
प्रजा करे मतदान पर, करे नहीं मत-दान ।
चुनिए अच्छे व्यक्ति को, दल दूषण की खान ॥
तंत्र प्रजा का दास है, प्रजा सत्य ले जान ।
प्रजा पालती तंत्र को, तंत्र तजे अभिमान ॥
सुख-सुविधा से हो रहे, प्रतिनिधि सारे भ्रष्ट ।
श्रम कर पालें पेट तो, पाप सभी हों नष्ट ॥
प्रजा न हो यदि एकमत, खो देती निज शक्ति ।
हावी हो सियासत-तंत्र, मिटे राष्ट्र-अनुरक्ति ।

- नेपियर टाउन, जबलपुर (म.प्र.)

संघर्ष और सफलता की गाथा

बराक ओबामा

- डॉ.विद्या केशव चिटको

(गतांक से आगे...)

नेसबिट ने ओबामा को पूरा भरोसा दिया, स्पष्ट दृष्टि दी और ध्यान आकर्षित करते हुए उन्हें मनवाया कि वह करने योग्य कार्य है और उसमें जीत निश्चित है.

नेसबिट ने प्रिट्जकार परिवार जो शिकागो का धनाढ्य परिवार रहा उससे ओबामा को मिलवाने की तारीख निश्चित की. प्रिट्जकार का नाम था. और उनकी चार पीढ़ियों ने उन्हें व्यापार में नाम, पैसा, शोहरत, इज्जत कमाई थी. वे शिकागो में धन सम्राट थे. अतः समर २००२ में मिशेल अपनी दो बच्चियों के साथ उनकी भेंट के लिए पेंट प्रिट्जकार उनके सप्ताह अंत का कॉटेज जो मिशिगन लेक फ्रंट पर था वहां उनसे मिलने गया अपनी उम्मीदवारी का प्रचार करने. प्रिट्जकार ओबामा से मिले. उसकी बातों से प्रभावित हुए. घंटों अनेक विषयों पर चर्चा होती रही. प्रिंट्जकार ने देखा कि वह एक बड़ा चिंतनशील मनुष्य है और जिस ढंग से दुनिया के बारे में सोचता है वैसा ही उपाय करता है.

प्रिट्जकार पति पत्नी को आदमी की परख थी. ओबामा से बातचीत करते हुए उन्होंने समझ लिया था कि इस शख्स को अवसर मिला तो निश्चित ही वह देश का उत्तम नेतृत्व कर सकेगा. बराक अफ्रिकन अमेरिकन सिनेटर है पर इसे वैद्यकीय व्यापार, विदेश नीति, युद्धशास्त्र और दुनिया के साथ संबंध के इतिहास के बारे में क्या जानकारी है? इसकी भी परीक्षा करनी होगी. अतः प्रिट्जकार ने उसके और दो इंटरव्यू लिए.

उन्होंने देखा कि ओबामा होशियार विचारशील और विश्वासी है. वह भरोसामंद

है. पूरे एक हफ्ते तक वे विचार करते रहे. ओबामा को परखते रहे. और उसके बाद उन्होंने उसे समर्थन करने का निश्चय किया. प्रिट्जकार ने जब सम्मति दे दी तब अनेक डेमोक्रेट्स और लोक हितैषी भी उसे समर्थन करने के लिए आगे आए.

डेविड एक्सलोर्ड तो पहले से ही उसके साथ रहा. २१ जनवरी २००३ को बराक ओबामा ने डाउन टाउन चिकागो होटल में उसने ग्रे चिको के साथ दूसरा घोषित प्रत्याशी जाहिर किया और अपने काम में लक्ष्य प्राप्ति के लिए रात दिन एक कर जुट गया.

अब यह चार लोगों में चुनाव भिडंत रही.

हैन्स, हल और चिको और ओबामा. ब्लेर हल वैसे काला आदमी था. हजारों मिलियन डॉलर्स खर्च कर सकता था.

ओबामा को आफ्रिकन अमेरिकन और लिबरल लीनिंग पार्टी के पदधारी और रेवरेंड जेस्से जाकसन का समर्थन रहा. कुछ गोरे वोटर भी बराक के पक्ष में रहे कारण उसकी मां कॉनसास की रही. पिता ने अमेरिकन आयल में नौकरी की थी. बराक ओबामा की स्कूली शिक्षा हवाई में हुई थी. हारवर्ड से उसने कानून की पढाई की थी. वह 'लॉ रिव्यू' का संपादक रहा. बाद में प्रकाशन में भी चुना गया था. बराक सबसे अच्छा लगा. बराक के सभी प्लस प्वाईंट रहे.

डेविड एक्सलॉर्ड ओबामा का मित्र और मीडिया परामर्शदाता रहा. उसने ओबामा को सुझाव दिया कि एर्न्ड मीडिया मतलब आप स्वयं अपना प्रचार करो. ओबामा तो हिम्मत हारनेवाला नहीं था. वह शहर गांव छोटे छोटे काउंट्री एकदम चार दो मकानों की ही कॉलनी रोड, चर्च, पब्लिक गार्डन, सेंटर सभी जगह गया. एक-एक आदमी से मिलता रहा.

एक इंटरव्यू के समय उससे पूछा गया उसके उत्तर देते हुए उसने लिखवा है कि मैं मीलों पैदल चला. सामान्य से सामान्य व्यक्ति से मिला. मॉल में बोझा ढोते व्यक्ति, हेयरकटिंग सलून, किसा, फार्मस में काम करते सब प्रकार के लोगों को सुनता रहा. उनके बेरोजगार होने के, पैसा न होने के कारण अपने बच्चों को स्कूल न भेज पाने का दुख, नौकरी आय का जरिया कुछ भी न होने के कारण अपनी परिवार के बीमार व्यक्ति को अस्पताल में सेवा सुश्रुषा, आपरेशन

दवादारु पर खर्च न करने की पीड़ा और युद्ध में भेजे गए इराक युद्ध पर गए नौ जवानों के परिवार के दुख; इन सबको सुनता रहा.

उनकी सरलता, सादगी, भोलापन और उनकी इच्छाओं, आशाओं से ओबामा बहुत ज्यादा अस्वस्थ हो गया. ये भोले भाले गरीब लोग दिन भर काम करते थे. मेहनत मजदूरी करते थे. इनका पेट इनके हाथ पर था. वे भी चाहते थे कि वे अपने बच्चों को स्कूल में पढ़ायें. अपने बच्चों को अच्छे कपड़े पहनाने की उनकी भी चाहें रही. उनकी चाह यह रही कि उनके बच्चे स्कूल की पढ़ाई पूरी कर कॉलेज में जाकर पढ़ें. अपने परिवार में बीमार व्यक्ति का वह भी इलाज करवाने की चाह लिए हुए थे. अनेक ऐसे इनके जीवन मूल्य रहे.

बराक उनसे सहमत थे. जीत हासिल करने के विश्वास के साथ अमरीकी राजनीति को अपनी जीवन परिस्थितियों को भी हम बदल सकते हैं.

बराक ओबामा को ९५ प्रतिशत ब्लैक के वोट मिले और समग्र रूप में ५३ प्रतिशत. यह परिणाम कल्पनातीत रहा. अमेरिका के सभी अखबारों में समाचार बड़े-बड़े अक्षरों में छपा.

ओबामा जीत गए. बराक ओबामा साँस के लिए ताजी हवा थे.

एलिनाय के इतिहास में यह एक नया स्वर्णिम पृष्ठ रहा. काले लोगों का राष्ट्रीय पद तक पहुंचना याने आकाश को छूना रहा. धरती पर आकाश के तारे तोड़ लाना रहा. सर्वत्र आनंद ही आनंद.

ओबामा की विजय याने डेमोक्रटिक की विजय रही. सर्वत्र ''हम जीत गए हम जीत गए'' ऐसी गूँज गूँजने लगी, भीड में, चुनाव के बाद के भोज में भी.

शिकागो में सालों से रहती डेबोरा महिलाओं के नेत्रों से अश्रुधारा बह रही थी. ये आनंदाश्रु रहे. वह बोली मैं उसकी जीत से अभिभूत हूँ एक बूढ़े ने कहा मैं जब पहली बार इससे मिला और इसका भाषण सुना तभी मैंने निश्चय कर लिया था कि मैं इसे ही वोट दूंगा.

विजयोल्लास के उपलक्ष्य में एक भव्य दिव्य विजयोत्सव भोज का आयोजन किया गया था. ओबामा की पत्नी मिशेल उसकी छः साल की बच्ची मालिया, तीन साल की नातिश सशा, ओबामा की बहन माया उसके पति, मिशेल का भाई क्रेग

राबिन्सन और परिवार के अनेक सदस्य और हजारों की संख्या में उसके हितैषी मित्र, लेखक पत्रकार इकट्ठे हुए थे.

रेवरेंड जैसी जेकसन मंच पर आए और उन्होंने ओबामा की जीत का समर्थन किया.

ओबामा ने हाथ हिलाकर सभी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि यह विजय मेरी नहीं आप सबके कठिन परिश्रम दृढ़ विश्वास निश्चय की विजय है.

उन्होंने दोहराया कि प्रचार के दौरान उन्होंने डेमोक्रेट के जिन आदर्शों का बयान किया था कि वह सामाजिक परिवर्तन के महान उद्देश्य के लिए कार्य कर रहा है और असुरक्षित नागरिकों को सुरक्षा प्रदान करना और उनके अवसर बढ़ाना तथा मूक लोगों को आवाज़ देना एवं अधिकार विहीन लोगों को अधिकार देना, सुविधाओं से वंचित लोगों को सुविधाएँ देते हुए उनके अमरीकी सपने पूरा करने का अवसर देना आदि उनकी वरीयताएँ हैं.

पूरे भाषण भर तालियों की कड़कड़ाहट, होती रही बाहर नीले रंग की पताकाएं फहरा रही थीं. यह एक अभूतपूर्व आनंद उल्लास का क्षण रहा होटल के बॉलरुम में 'हम जीत सकते हैं' के स्वेत, नीले बड़े बैनर लगे थे. **- क्रमशः**

शतायु हों भाई जी !

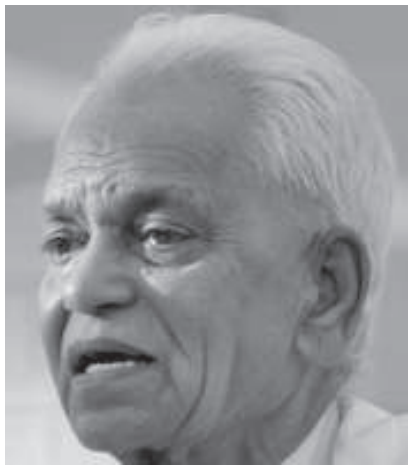

डॉ.गिरीश गांधी राष्ट्र सामाजिक कार्यकर्ता पुरस्कार से राष्ट्रीय युवा नेता, राष्ट्रीय युवा योजना के निदेशक, आन्तर भारती के विश्वस्त, अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित भाईजी अर्थात् डा.एस.एन. सुब्बराव को नागपूर में २१ जुलाई को सम्मानित किया गया. जिसमें उन्हें रु. एक लाख पुरस्कार स्वरुप दिए गए. देश के सभी युवाओं की ओर से भाईजी का अभिनंदन !

श्रद्धांजलि-१

निराधार, परित्यक्ताओं का आधार-वटवृक्ष खो गया, ज्येष्ठ समाज सेविका

डॉ.शैला लोहिया का निधन

निराधार, परित्यक्ता व महिलाओं के प्रश्न को सुलझाने के लिए मनस्विनी महिला प्रकल्प की आधार बनीं, भरपूर लेखन साहित्य लिखनेवाली समाजव्रती डॉ.शैला लोहिया का वृद्धावस्था के कारण बुधवार प्रातः २४ जुलाई को देहान्त हो गया. वे ७३ वर्ष की थीं. 'मानव लोक' के संस्थापक डॉ.द्वारकादास लोहिया की पत्नी थीं.

सामाजिक अभियान के डॉ.द्वारकादास लोहिया से सन १९६२ में उनका अन्तरजातीय विवाह करके डॉ.शैला लोहिया अंबाजोगाई में स्थाई हुईं. साने गुरुजी द्वारा प्रेरित राष्ट्र सेवा दल के कार्यकर्ता अॅड्.शंकरराव व शकुंतला परांजपे की कन्या होने की वजह से बचपन से सेवा दल से जुड़ी थीं. डॉ.लोहिया से विवाह के उपरान्त एक ने धनार्जन करना तथा एकने पूरा समय सामाजिक कार्य करने का निश्चय कर के लोहिया दम्पतिने मराठवाडा नव निर्माण लोकायत (मानवलोक) संस्था की स्थापना की.

डॉ.शैला लोहिया स्वामी रामानन्द तीर्थ कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय की अधिव्याख्याता के रूप में कार्यरत थीं. निराधार परित्यक्ता व महिलाओं के लिए मानवलोक की शाखा के रूप में मनस्विनी महिला प्रकल्प शुरु करके डॉ.लोहिया ने हजारों निराधार महिलाओं को आश्रय देने का काम किया. इसी दौरान लेखन कार्यभी किया.

'लोकसत्ता' के मराठवाडा वृत्तान्त में उनके स्तम्भलेख आते थे. भूमि और स्त्री विषय पर पी.एच.डी. तथा 'भोंडाला, भोलाबाई चे गाणे' इस विषय पर एम.फिल किया. स्वरांत, तिच्या डायरीतील पाणी, कथालिका, वाहत्या वाऱ्याचे संगे, मनतरंग, रुण झुणत्या पाखरा, गजा आडच्या कविता आदि कथा, तथा सात-रंग सात सुर बाल उपन्यास आदि साहित्य की रचना की. उनके साहित्य व सामाजिक कार्य के लिए उन्हें विविध संस्था व सरकार से २२ पुरस्कार प्राप्त हुए. अन्तरराष्ट्रीय परिषदों में विविध विषयों पर प्रबंध, और टिप्पणियां लिखीं. इसी काल में अनेक देशों में भ्रमण किया. समाज के उपेक्षित व दुर्लक्षित तबके का अध्ययन गहराई से किया. डॉ.द्वारकादास लोहिया के सामाजिक कार्य में कंधेसे कंधा मिला कर चलीं. इसलिए महाराष्ट्र के सामाजिक क्षेत्र में डॉक्टर दम्पति की अलग पहचान है. उनके बाद उनके पति, दो पुत्र एक पुत्री ऐसा परिवार है.

- दै.लोकसत्ता से साभार हिन्दी प्रस्तुति : डॉ.मधुश्री

श्रद्धांजलि-२

जीवनव्रती - ठाकुरदासजी बंग

एखाद 'जीनियस' व्यक्ति में विनम्रता भी हो सकती है इसका साक्षात् उदाहरण हैं बंग साहब.

वर्धा के महिला आश्रम में जहाँ हम बन गये, बडे हुए वहाँ बंगसाहब के सानिध्य में रहना कठिन नहीं था. लेकिन गोपुरी में, पवनार - सेवाग्राम में वे कभी दिखें तो उन्हें जाकर मिलना, उनसे बातचीत करना, इतनी हिम्मत नहीं थी. १९७४ में एक शिविर में मैंने बंगसाहब को पहलीबार सुना 'शांत, सीधी, संयत, अहंकाररहित, अपनी परिधि में कहीं पता भी नहीं चलेगा इस तरह के सहज - संवादों में बोलना, जे.पी. के आंदोलन में उन्होंने साक्षात् विनोबाजी के विरोध में जानेवाली भूमिका लेकर संपूर्ण क्रांति आंदोलन में कूद पड़े. संपूर्ण क्रांति आंदोलन में १९ माह के कारावास को झेला. वह काल सर्वोदयी आंदोलन की दृष्टि से कसौटी का ही था - रहेगा. यह विद्रोह पूरे परिवार में था ही. बंगसाहब इस आंदोलन के नेता रहे. इन सब कसौटी के समय में भी, कड़वाहट को आने न देकर सर्वोदय परिवार के विरोध झेलनेवाले, सहनेवाले बंगसाहब मुझे दिखाई देते हैं. वस्तुतः नारायणभाई देसाई, सिद्धराजजी डड्ढा, गंगाप्रसादजी अग्रवाल जैसे अनेक वरिष्ठ सर्वोदयी कार्यकर्ता उस निर्णय में सहभागी थें और सर्वोदय के दीर्घकाल के आंदोलन का तत्वनिष्ठपक्ष यह जे.पी. के संपूर्ण क्रांति आंदोलन का बडा ॲसेट ही रहा.

संपूर्ण क्रांति आंदोलन आगे के आखिरी स्तरपर अशोक और अभय ये उनके पुत्र और पद्मजा और रानी ये उनकी बहुएँ. इनके नेतृत्व में 'चेतना विकास के कार्य की शुरुवात हुई. खेती, शिक्षा, आरोग्य, महिला सक्षमीकरण इन क्षेत्रों में ग्रामीण भागों में काम और उससे ग्रामपरिवर्तन इस प्रकार इस काम का स्वरूप था. चेतना विकास के पहले काल में मैं कुछ समय इस काम से जुड़ गई थी. उस समय बंगसाहब बीच-बीच में मिलते थे. विशेषतः चेतना विकास की मिटिंग के समय, एखाद गाँव के शिविर में, मिटिंग, शिविर अनौपचारिक होते थे. और बंगसाहब अधिक न बोलते हुए, कुतूहलतासे, उत्सुकतासे सब समझ लेते थे. वे कुछ कहते, सूचना भी देते थे तो अनाग्रह से ! कभी बिल्कुल सीधासा लगनेवाला प्रश्न पूछकर तफसील समझ लेते थे. कार्यकर्ता के उस नये यौवन काल में 'हमें सब कुछ मालूम है' इस प्रकार लगने के दिन में बंगसाहब की वह

(पृष्ठ ३० पर...)

विशेष आलेख - १

वन के लाभ ग्रामीणों को

- अपर्णा पल्लवी

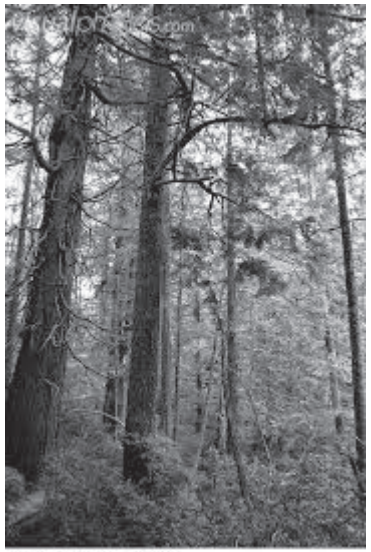

महाराष्ट्र संस्कार ने १० गावों को वन उत्पाद विक्री में से उनका हिस्सा देन की प्रशंसनीय शुरुआत की है. लेकिन इसमें कुछ प्रक्रियागत कमियां भी सामने आई हैं. आवश्यकता इस बात की है कि इस हिस्सेदारी के हिसाब-किताब का और अधिक पारदर्शी बनाया जाय. इसी के साथ यह उम्मीद भी की जानी चाहिए कि संयुक्त वन प्रबंधन एवं हिस्सेदारी की यह योजना महाराष्ट्र के अन्य गावों के साथ देश भर में शीघ्र ही क्रियान्वित हो.

महाराष्ट्र में अब तक किसी भी गांव को संयुक्त वन प्रबंधन के अंतर्गत वन लाभों में से अपना हिस्सा प्राप्त नहीं हुआ था. अपने तरह की प्रथम पहल में महाराष्ट्र वन विभाग ने संयुक्त वन प्रबंधन योजना के अंतर्गत १० गावों को लाभ में से उनका हिस्सा देने का निर्णय लिया है. इस संदर्भ में गढ़चिरौली जिले के आठ एवं गोंदिया जिले के दो गांवों को कुल ७४.५१.०६३ रुपए की राशि प्रदान की जाएगी. यह राशि उन्हें वन उत्पादों की बिक्री से प्राप्त धन पर लगने वाले ७ प्रतिशत वन विकास कर के माध्यम से प्रदान की जाएगी. संयुक्त सचिव द्वारा १३ मई को मुख्य वन संरक्षक को लिखे गए पत्र में यह जानकारी दी गई कि संयुक्त वन प्रबंधन योजना के अंतर्गत ग्रामीणों को वन उत्पाद में से उनका हिस्सा दिया जाना अनिवार्य है. हालांकि वर्ष १९९२ से लागू इस योजना से अब तक किसी भी गांव को कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ है.

वन विभाग के प्रमुख सचिव प्रवीण परदेशी का कहना है कि यह कदम उठाने में देरी इसलिए हुई क्योंकि अप्रैल २००३ के एक शासकीय प्रस्ताव के अनुसार संयुक्त वन प्रबंधन समिति गावों को तभी भुगतान करेगी जबकि यह सुनिश्चित हो गया हो कि उन्होंने कम से कम दस वर्षों तक वनों का संरक्षण किया हो. उनका कहना है 'चूंकि भुगतान सन २०१३ में होना है. अतएव संयुक्त वन प्रबंधन के खाते से भुगतान नहीं किया जा सकता. इसलिए यह तय किया गया वन सरचार्ज जो कि वनों का जिलास्तरीय विकास कोष है. के माध्यम से भुगतान का निर्णय लिया गया है. संयुक्त वन प्रबंधन समितियां वन की सुरक्षा करती है. अतएव उनका ही इस पर पहला दावा

है. इस योजना के अंतर्गत आनेवाले गांवों को विभिन्न चरणों में इसी तरह भुगतान किया जाएगा.'

वन अधिकार समूहों ने इस पहल का स्वागत किया है. लेकिन के इस तथ्य से असंतुष्ट हैं कि वन विभाग ने राज्य संस्कार के १६ मार्च १९९२ के निर्णय की अवहेलना की है. क्षेत्र के प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता एवं वरिष्ठ वन अधिकार कार्यकर्ता मोहन हीराबाई हीरालाल का कहना है कि सरकार का प्रथम निर्णय संयुक्त वन प्रबंधन गांवों के लिए बेहतर अवसर प्रदान करता था. इसके अंतर्गत प्राकृतिक वनों को पांच वर्षों तक संरक्षित करने के बाद लाभ प्राप्ति की पात्रता थी. उनका कहना है कि वर्ष १९९२ एवं २००३ के मध्य गठित संयुक्त वन प्रबंधन समितियों द्वारा प्राकृतिक वनों एवं रोपे गए वनों दोनों के लिए १० वर्ष की प्रतीक्षा अवधि अनिवार्य कर दी गई है.

वही परदेशी प्रथम सरकारी निर्णय को गांववासियों के लिए लाभप्रद नहीं मानते क्योंकि उनके अनुसार इसमें मुख्य लकड़ी पर भुगतान मिलने की पात्रता नहीं है. हालांकि सन् १९९२ के सरकारी प्रस्ताव की धारा ९ इस बात को अनुचित मानती है. इसमें साफ लिखा है कि संयुक्त वन प्रबंधन वनों के सभी उत्पाद जिसमें निरंतर आवश्यकताएं एवं वन उत्पादों के इस्तेमाल से संबंधित सामुदायिक अधिकार शामिल हैं प्राथमिकता के आधार पर समितियों को दिए जाएं. शेष ५० प्रतिशत समितियों को नकद प्रदान किया जाए.

मोहनभाई ने आरोप लगाया कि विभाग जानबूझकर मूल सरकारी प्रस्ताव से खिलवाड़ कर रहा है और ग्रामीणों को नुकसान पहुंचा रहा है. विभाग प्रत्येक गांव से वर्षानुसार एवं उत्पाद के हिसाब से अर्जित धन की विस्तृत जानकारी भी नहीं दे रहा है. उनका कहना है ग्रामीणों को सिर्फ धन देना ही काफी नहीं है. सभी तरह के रिकार्ड में पारदर्शिता होनी चाहिए और ग्रामसभाओं को इस बात की जानकारी देनी चाहिए कि इस धन की गणना किस प्रकार की गई है. इस संबंध में ग्रामसभाओं से अनुमति भी ली जानी चाहिए. प्रमुख सचिव को लिखे गए पत्र में उन्होंने वेबसाईट पर विस्तृत हिसाब देने की मांग की है. साथ ही उन्होंने यह भी मांग की है कि ऐसी पद्धति विकसित की जाए जिससे कि संयुक्त वन प्रबंधन समितियों के वन उत्पाद की बिक्री के तुरंत बाद अपना हिस्सा प्राप्त हो सके.

श्री परदेशी के अनुसार मोहनभाई के वितरण संबंधित विस्तृत हिसाब देने के प्रस्ताव को सरकार ने मान लिया है और इस पर शीघ्र अमल करेगी. भविष्य में भुगतान के संबंध में उनका कहना है कि सरकार के २५ अक्टूबर २०११ के नवीनतम प्रस्ताव के अनुसार समितियों को वार्षिक भुगतान वन उत्पादों की बिक्री के तुरंत बाद प्रदान कर दिया जाए. लेकिन उनकी इस बारे में चुप्पी है कि संयुक्त वन प्रबंधन का हिसाब किताब विभाग की वेबसाईट पर प्रदर्शित किया जाएगा या नहीं ?

विशेष आलेख - २

वैदिक-साहित्य में जल-संरक्षण एवं प्रबंधन

- डॉ. शिवानी

पञ्चमहाभूतों में से जल चतुर्थ महाभूत माना जाता है. जहाँ जल जीवन के लिए उपयोगी और अनिवार्य है, वहीं समस्त प्रगति का संवाहक भी है. वैदिक -साहित्य का न्यूनतम ५० प्रतिशत भाग जल तत्व का किसी न किसी रूप में उल्लेख करता है. वेद मे जितना वर्णन इन्द्र या जल के अधिष्ठाता देवताओं का हुआ है, उतना शेष देवताओं का नहीं हुआ है. मत्स्य के समान जल प्रत्येक प्राणी के जीवन के लिए अनिवार्य तत्व है. व्यवहार और विज्ञान की दृष्टी से जलतत्व का अनेक रूपों में उपयोग होता था. जलतत्व के सम्यक ज्ञान से अन्तरिक्षलोक और द्युलोक के बहुत से जटिल और अनसुलझे रहस्य भी उद्घाटित हो सकते है. वैदिक साहित्य में जल -संरक्षण एवं उसका प्रबन्धन इस लेख का उद्देश्य है.

जल की उत्पत्ति - अर्थवेद के अनुसार जल में अग्नि (Oxygen) और सोम (Hydrogen)दोनों हैं. वेदों में ऑक्सीजन के लिए, अग्नि, मित्र, वैश्वानर, अग्नि और मातरिश्वा आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है. Hydrogen के लिए सोम, जल, आपः, सलिल, वरुण आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है. अथर्ववेद में कहा गया है कि जल में मातरिश्वा वायु (Oxygen) प्रविष्ठ है. ऋग्वेद के अनुसार जल में वैश्वानर अग्नि विद्यमान है.

ऋग्वेद के मन्त्र के अर्थ अनुसार- जल की प्राप्ति के लिए मैं पवित्र उर्जा (Energy) वाले मित्रे(Oxygen)और दोषों को नष्ट करने वाले वरुण (Hydrogen) को ग्रहण करता हूँ यहां मित्र और वरुण शब्दों के द्वारा(Oxygen) और (Hydrogen)का निर्देश है, परन्तु इसकी मात्रा का स्पष्ट संकेत नहीं है. जिन का सूत्र है-(H_20) विज्ञान के अनुसार हाईड्रोजन गैस के २अणु (मोलिक्यूल) और ऑक्सीजन का एक अणु एक पात्र में रखकर उसमें विदयुत -तरंग प्रवाहित

करने पर जलप्राप्त होता है. ऋग्वेद के चार मन्त्रों में कहा गया है कि एक कुम्भ में मित्र और वरुण का रेत वीर्य (कण) उचित मात्रा में एक ही समय में डाला गया और उससे अगस्त्य और वसिष्ठ ऋषि का जन्म हुआ इस कार्य के लिए विदयुत का प्रवाह छोड़ा गया. अगस्त्य और वसिष्ठ उर्वशी के (विद्युत) मन से उत्पन्न हुए है अर्थात ये दोनों उर्वशी के मानस पुत्र है. अतः स्पष्ट होता है कि मित्र और वरुण से जल (वसिष्ठ) की उत्पत्ति हुई . अगस्त्य को कुंभज (घड़े से उत्पन्न) और वसिष्ठ ओर मैत्रावरुण (मित्र-वरुण का पुत्र) कहा गया है. यजुर्वेद और शतपथ ब्राम्हण में बादलों को जल का सूक्ष्म रूप (भस्म) कहा गया है?

जल का महत्व एवं उसके गुण- मानव जीवन में जल का विशिष्ट महत्व है. जल सभी रोगों का इलाज है. यहाँ तक कि यह आनुवंशिक (Hereditary) रोगों को भी नष्ट करता है. जल में सोमादि रसों को मिलाकर सेवन करने से मनुष्य दीर्घायु होता है. चिकित्सा के लिए जल सर्वोत्तम होता है. गइराई से निकाला हुआ जल अत्युत्तम होता है. हिमालय से निकलने वाली नदियों का जल विशेष लाभकारी है. हृदय के रोगों में भी इसका प्रयोग करना चाहिए. बहता हुआ जल शुद्ध और गुणकारी होता है. यह मनुश्य को शक्ति और गति देता है. पौष्टिकता और कर्मठता के लिए शुद्ध जल का सेवन लाभकारी होता है. जल बलवर्धक है और शरीर को सुन्दरता प्रदान करता है. जल ही सभी प्राणियों के जीवन का आधार है. जल का मुरव्य गुण है पदार्थों को गीला करना और उसके दोषों को निकालना. विद्युत जल का प्रकाश है. पृथ्वी जल का आश्रय स्थान है. प्राण जल का सूक्ष्म रूप है.

मन जलीय तत्वों का समुद्र है. वाणी में सरसता और जीभ में आर्द्रता जल के कारण है. जल के कारण ही आँखों में तेज और दर्शन शक्ति है. मछली की तरह आँखें भी जल की प्रेमी हैं अतः आँखों को जल निवास स्थान कहा गया है. कानों को भी जल का सहवासी बताया गया है. कान में जल की सूक्ष्म मात्रा न होने पर बहरापन होता है. द्युलोक जल का निवास स्थान है, अन्तरिक्ष में जल व्याप्त है. समुद्र जल का आधार है. समुद्र से ही जल भाप बनकार वर्षा के रूप में पृथवी पर आता है जो कृषि के लिए अत्युत्तम माना गया है. सिकता (रेत) जल का ही उच्छिष्ट भाग है इसलिए जल को अन्न का कारण कहा गया है. तीनों लोकों की स्थिती का आधार जल ही है.

अर्थात जल, पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक तीनों स्थानों पर व्याप्त है. अथर्ववेद में जल के पाँच गुणों का वर्णन हैं (१) तपस -गर्म होना, गर्मी देना, ताप और

सन्ताप (२) हरस - दोष या मल को दूर करना, स्वच्छता प्रदान करना (३)अर्चिस -तपाना, रगड़ से विद्युत -उत्पादन, उत्तेजना देना. (४) शोचिस- प्रकाश देना, दाहकत्व और शोधकत्व (५)तेजस -तेज, कांन्ति, सौंदर्य, लावण्य और प्रसन्नता देना. ऋग्वेद में जल के तीन गुणों का विशिष्ट उल्लेख है. (१)मधुश्चुतः मधु या मधुरता देने वाले. (२) शुचयः -दोषों या मलों को निकालकर स्वच्छता प्रदान करने वाले. (३) पावकाः दोषों को जलाने, शुद्ध करने और पवित्रता प्रदान करने वाले, जल में सभी देवतत्वों का निवास है अतः जल देवालय है.

जल संरक्षण के उपाय - प्राकृतिक या अन्य स्रोतों से उत्पन्न अवांछित बाहरी पदार्थों के कारण जल दूषित हो जाता है वह विषाक्तता एवं सामान्य स्तर से कम ऑक्सीजन के कारण जीवो के लिए हानिकारक हो जाता है. तथा संक्रामक रोगों को फैलाने में सहायक होता है. जल जीवन का प्रमुख साधन है. यह पृथ्वी का अधिकतर जल समुद्री है, जो खारा होने के कारण पीने लायक नहीं है. पृथ्वी पर जितना पानी है, उसका केवल ३ प्रतिशत ही शुद्ध है. जिस पर सारा संसार निर्भर है. अतः जल प्रदूषण -नियंत्रण उपायों को ध्यान में रखना बहुत आवश्यक है- (१) मल के निष्कासन हेतु सीव्रेज की ठीक व्यवस्था,(२) कीटकनाशक रसायनों का कम प्रयोग,(३) परमाणु विस्फोटों पर प्रतिबन्ध लगाना, ४) मृत-जन्तुओं को जल में न फेंकना.

ऋग्वेद में मानव के रक्षक पदार्थ में जल, औषधी, वन वृक्ष, पर्वत और युलोक का उल्लेख है. इन पदार्थों को हानि पहुँचना, अपनी रक्षा को संकट में डालना है. यजुर्वेद के अनुसार जल को दूषित न करो और वृक्ष -वनस्पतियों को हानि न पहुँचाओं, अन्य मन्त्र के अनुसार -जल को शुद्ध रखो, पौष्टिक गुणों से युक्त करो तथा औषधियों को जल से सींचकर सुरक्षित रखो.

ऋग्वेद में कहा गया है कि हे परमात्मन! हमें प्रदूषण रहित जल, औषधियाँ और वन दो. प्रदूषण रहित जल ही स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है. नदियों आदि के जल को प्रदूषण - मुक्त रखने का उपाय है यज्ञ यज्ञ की सुगन्धित वायु जल के प्रदूषण को नष्ट करती है.

पुराणों आदि में प्रदूषण -निवारण -आश्चर्य की बात है कि आज से सैकडो वर्ष पूर्व भारतीय मनीषियों ने प्रदूषण की समस्या पर ध्यान दिया था. पद्मपुराण के अनुसार गंगाजल में थूंकना, मूत्र करना, कुड़ा-करकट डालना, गंदा जल डालना और गंगा किनारे शौच आदि करना महापाप है. ऐसा करने से नरक - प्राप्ति और ब्रहाहत्या का पाप लगता है.

मनुस्मृति में बड़े कारखानों को प्रदूषण का कारण मानते हुए इन्हें लगाना पाप माना है. इनसे वायु-प्रदुषण के साथ ही जल का भी प्रदुषण होता है. इनका गन्दा पानी और धुआं नदी और तालाबों को दूषित करता है. वृक्षों को लगाना और उनकी सुरक्षा, जल संरक्षण में सहायक है. ऋग्वेद के अनुसार वृक्ष जल के स्रोतो की रक्षा करते हैं. वृक्ष ही वृष्टि के लिए उपयोगी माने गए हैं.

जल -प्रबन्धन - प्रबन्धन का अर्थ है जोड़ना, जल को सचित करना अर्थात जहाँ पर पानी नहीं है, वहाँ पा पानी संचित करना. जल-प्रबन्धन के लिए सर्वप्रथम जलस्त्रोतों का पता लगाना होगा. अथर्ववेद के अनुसार उपजीका (दीमक) समुद्र और जल -स्रोत से अपनी बमीं (दीमक द्वारा बनाए गए मिट्टी के टीले) तक जल लाती है. दीमक अपने टीले में एक विशेष प्रकार की आर्द्रता नमी बनाए रखती है. इसके लिए उसे जल स्रोतों का मार्ग ढूंढना पड़ता है. अथर्ववेद का कथन है कि दीमक रेगिस्तान मे भी अपने टीले को जल से सींचती है.

यद् वो देवा उपजीका, आसिंचन धन्वन्युदकम् ।

वराहमिहिर के अनुसार जल-स्रोतो का पता लगाने में दीमकों के मार्ग का पता लगाना अत्युत्तम साधन है. वराहमिहिर ने अपने ग्रन्थ बृहत्सहिंता के दकार्गलाध्याय में जलस्रोतों का पता लगाने के लिए कई उपाय बताए हैं. उनका कथन है कि पृथ्वी के अन्दर शिराएँ (Veins) है. जिस प्रकार मनुष्य के शरीर में नाड़ियाँ है और उनके माध्यम से शरीर में रक्त प्रवाह होता है. उसी प्रकार पृथ्वी में इन शिराओं के माध्यम से जल स्रोतों का जाल बिछा हुआ है. ये शिराएँ कहीं ऊपर हैं, कहीं नीचे. अतएव भूगर्भ में जल विभिन्न निचाई पर मिलता है. वराहमिहिर ने दकार्गलाध्याय में वाल्मीक, (दिमक का टीला)विभिन्न प्रकार के वृक्ष, विविध प्रकार की मिट्टी, दूब घास आदि के आधार पर भूगर्भीय जल-स्रोतों का पता लगाने के प्रकार दिये हैं तो जिसमें दीमक का टीला सर्वोत्तम उपाय है. क्योंकि उसके आसपास जलस्रोतों का पता लगाने के प्रकार दिये हैं जिसमें दीमक का टीला सर्वोत्तम उपाय है क्योंकि उसके आसपास जलस्रोत होता है. इस प्रकरण में गहराई की नाप के लिए पुरुष शब्द का प्रयोग हुआ है. डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने कौटिल्य अर्थशास्त्र के आधार पर ५ फुट ४ इंच का एक पुरुष या पौरुष नाप माना है. यहाँ कुछ जलस्रोत के साधनों का विवरण प्रस्तुत हैं-

१. वेतस (वेदमजनूं) के वृक्ष सें जल का ज्ञान- यदि जल रहित देश में वेतस का वृक्ष हो तो उससे तीन हाथ पश्चिम में डेढ़ पुरुष (८ फीट)

नीचे जल होता है. **२. जामुन के वृक्ष से जल का ज्ञान** -यदि जल रहित देश में जामुन का वृक्ष हो तो उससे तीन हाथ उत्तर दिशा में २ पुरुष (१० फुट ८इंच) नीचे जल होता है. यदि जामुन के वृक्ष से पूर्व की ओर दीमक का टीला हो तो उससे तीन हाथ दक्षिण की दिशा में २ पुरुष (१० फुट ८ इंच) नीचे मीठा जल निकलता है. यदि इसकी खुदाई में नीले रंग की मिट्टी निकलती है तो बहुत बड़ा जल का स्रोत समझना चाहिए **३. गूलर के वृक्ष से जल का ज्ञान**-यदि जल रहित देश में गूलर वृक्ष हो तो उससे तीन हाथ पश्चिम दिशा में ढाई पुरुष (१३ फुट ४ इंच) नीचे जल मिलता है. (४) बेर के वृक्ष से जल का ज्ञान - यदि बेर के वृक्ष से पूर्व की ओर नमी हो तो उससे तीन हाथ पश्चिम की दिशा मे तीन पुरुष (१६ फुट) नीचे जल का स्रोत होता है. **५. बहेड़े के वृक्ष से जल का ज्ञान : विभीतक(बहेड़ा)** वृक्ष के समीप दक्षिण दिशा में वल्मीक दिखाई दे तो उस वृक्ष से दो हाथ पहले डेढ़ पुरूष (८ फुट) नीचे जल का स्रोत होता है. ६. **महुए के वृक्ष से जल का ज्ञान-** मधुक (महुआ) वृक्ष के उत्तर में वल्मीक हो तो वृक्ष से पाँच हाथ पश्चिम दिशा में आठ पुरुष ४३ फुट ८ इंच नीचे जल का स्रोत होता है. ७. **कदम्ब के वृक्ष से जल का ज्ञान-** कदम्ब के वृक्ष के पश्चिम में वल्मीक हो तो उस वृक्ष से तीन हाथ दक्षिण पौने छः पुरुष (३० फुट ८ इंच) नीचे जल का स्रोत होता है. **८. ताड़ या नारियल के वृक्ष से जल का ज्ञान** - यदि ताड या नारिसयल के वृक्ष के पास वल्मीक हो तो उस वृक्ष से छः हाथ पश्चिम दिशा में ४ पुरुष (२१ फुट ४ इंच)नीचे जल का स्रोत होता है.

अतः वृक्षो को काटना नहीं चाहिए. वृक्षों की प्रशंसा में मत्स्यपुराण के अनुसार- दस कूपों के समान एक बावडी होती है तथा दस बावड़ियों के समान एक सरोवर होता है. दस सरोवरों के समान एक पुत्र होता है. दस पुत्रों के समान एक वृक्ष होता है. अभिप्राय यह है कि दस पुत्र अपने जीवन काल में जितना उपकार कर सकते है, उतना उपकार एक वृक्ष करता है.

निष्कर्ष - वेदों मे जल की उपयोगिता और महत्व पर बहुत प्रकाश डाला गया है. जल जीवन है, अमृत है, भेषज है, रोगनाशक है तथा आयुवर्धक है. मानव को जीवनी -शक्ति प्रदान करता है. जल में औषधियाँ, के तत्व विद्यमान है. वह शक्तिवर्धक है. जल संरक्षण के लिए सर्वप्रथम जल को प्रदूषण से बचाना है. वेदो में जल प्रदूषण मुक्त होने के लिए यज्ञ को श्रेष्ठ उपाय बताया गया है.

अतः वैदिक -साहित्य में जल-संरक्षण एवं उसका प्रबन्धन आदर्श प्रतिपादित है.

श्री. जयराम महिला महाविदयालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

बौद्धिक समीक्षा

- बजरंग मुनि

प्रश्न - **८ अप्रैल** २०१३ को पतंजली योग पीठ हरिद्वार उत्तराखंड में राष्ट्रीय सुधार शिखर सम्मेलन में आपके गंभीर विचार सुनने का अवसर मिला. आपने कहा कि सम्मेलन के समक्ष जो विजन प्रस्तुत किया गया है वह व्यवस्था में सुधार का है. इसमें व्यवस्था परिवर्तन दूर तक नहीं है. सारा सम्मेलन आपकी स्पष्ट समीक्षा का कायल हो गया कृपा पूर्वक आपसे निवेदन है कि व्यवस्था में सुधार तथा व्यवस्था परिवर्तन के अन्तः संबंधों पर अपनी बौध्दिक समीक्षा ज्ञान तत्व में देने की कृपा करे. आज समाज मे इसकी बड़ी आवश्यकता है.

-आचार्य पंकज

उत्तर - सात और आठ अप्रैल को रामदेव जी के योगपीठ में आयोजकों की ओर से निवास और भोजन की अच्छी व्यवस्था थी. योगपीठ के निर्माण और व्यवस्था पर रामदेव जी ने जो ध्यान दिया है वह अन्य पूंजीपतियों के लिये मार्ग दर्शक हैं. भव्य हाल में सिर्फ चालीस लोग ही उपस्थित थे किन्तु दो दिनों की चर्चा से लगा कि देश भर के कुछ चुने हुए लोग ही थे. विदेशों से आयी हुए कुछ बड़ी हस्तियां भी शामिल थीं. दो दिनों के बीच बाबा रामदेव कभी नहीं दिखे किन्तु बाबा के प्रमुख राजनैतिक सलाहकारों की पूरी टीम थी.

पूरे कार्यक्रम में बाबा रामदेव की ओर से एक अधिकृत बयान आया कि दो हजार चौदह के आम चुनावों में बाबा रामदेव की टीम प्रत्यक्ष भाग लेकर तीन सौ सीटों तक का प्रत्यक्ष बहुमत प्राप्त करने का प्रयत्न करेगी. किन्तु अनाधिकृत चर्चा में यह बात आम थी कि बाबा रामदेव न्यूनतम सौ सीटों पर भाजपा से समझौता करेंगे.

मुझे वहाँ एक तटस्थ समीक्षक के रुप में अन्तिम सत्र के अन्तिम समय में पांच मिनट में सम्पूर्ण विजन डाकुमेंट की समीक्षा के लिये कहा गया. मैंने पांच मिनट में ही स्पष्ट किया कि विजन डाकुमेंट में वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था में सुधार के अनेक गंभीर प्रयास शामिल हैं किन्तु सम्पूर्ण डाकुमेंट में व्यवस्था परिवर्तन का कोई अंश शामिल नहीं हैं. मेरे अनुसार विजन बनाने वालों की नीयत तो साफ दिखती है किन्तु इसमें समझदारी का अभाव है. मैंने संक्षिप्त समय में व्यवस्था परिवर्तन और व्यवस्था में सुधार के कुछ लक्षण भी बताये. आयोजकों ने मेरे भाषण को बहुत गंभीरता से लिया और बाद में कुछ और भी चर्चा की. कुल मिलाकर मैं वहाँ जाकर संतुष्ट था और आयोजक भी संतुष्ट थे.

वहाँ पांच मिनट में मैं व्यवस्था परिवर्तन और व्यवस्था में सुधार को नाम मात्र ही स्पष्ट कर सका था. आपके पत्र के बाद शेष अन्तर और स्पष्ट कर रहा हूँ.

१. भारत की वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था की कमजोरियां को दूर करना सुधार है और लोकतंत्र को लोक स्वराज्य की दिशा देना व्यवस्था परिवर्तन.

२. दुनिया की वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था संसदीय लोकतंत्र है. भारत ने भी उसी की नकल की है. संसदीय लोकतंत्र को सहभागी लोकतंत्र में बदलना व्यवस्था परिवर्तन है.

३. भारत में वर्तमान में लोकनियुक्त तंत्र है. अच्छे लोगों को संसद में भेजना सिर्फ सुधार है. लोक नियंत्रित तंत्र परिवर्तन है. संसद के अधिकारों में कटौती व्यवस्था परिवर्तन है. बाबा रामदेव सरीखे लोग व्यवस्था परिवर्तन न समझने के कारण अच्छे व्यक्तियों को संसद में भेजने की बात कहते हैं. अन्ना जी भी प्रायः ऐसा ही बोलते रहते हैं यद्यपि वे साथ साथ व्यवस्था परिवर्तन के मुद्दे भी उठाते रहते हैं. संसद में अधिकार सम्पन्न अच्छे और अधिकार विहीन बुरे लोगों के बीच अच्छे लोगों की संसद के अपेक्षा बुरे लोगों की संसद कम बुरी होगी. अधिकार सम्पन्न बुरे लोगों की अपेक्षा अधिकार सम्पन्न अच्छे लोगों का संसद में पहुँचना व्यवस्था में सुधार है. बुरे लोग भी संसद के अधिकार कम करें यह व्यवस्था परिवर्तन है.

४. वर्तमान व्यवस्था में हमारे प्रतिनिधि संरक्षक होते हैं और समाज संरक्षित. हमारे प्रतिनिधि स्वयं को शासक कहते भी हैं और मानते भी हैं जबकि समाज

को शासित. वर्तमान व्यवस्था में समाज के पास सिर्फ वोट देने का अधिकार ही होता है. शेष सारे अधिकार संसद के पास इकट्ठे हो जाते हैं. वर्तमान व्यवस्था में राज्य को अधिकार होता है कि वह समाज के अधिकारों की सीमाएं तय कर सकता है किन्तु राज्य अपने अधिकारों की सीमाएं स्वयं तय कर सकता है. वर्तमान व्यवस्था में व्यवस्था से जुड़े लोग अपने वेतन भत्ते तथा सुविधाएँ स्वयं तय कर सकते हैं. जिसकी कोई सीमा भी नहीं है. उनके मनमाने बढ़े वेतन भत्ते को समाज पूरा करने को बाध्य है. व्यवस्था परिवर्तन का अर्थ होगा कि समाज मालिक होगा और राज्य प्रबंधक या मैनेजर. समाज संविधान संधोधन के लिये संसद के एकाधिकार में कटौती करेगा, समाज राज्य के अधिकारों की सीमाएं तय करने की कोई व्यवस्था कर सकता है. इसी तरह मनमाने वेतन भत्तों की भी व्यवस्था कर सकता है. समाज जब चाहे उतने अधिकार राज्य को दे सकता है तथा वापस ले सकता है.

५. वर्तमान व्यवस्था में परिवार, गांव, जिला, प्रदेश और केन्द्र के अधिकार संविधान तय करता है जिस पर संसद का एकाधिकार है. परिवर्तित व्यवस्था में परिवार,गांव, जिला, प्रदेशअपने अधिकार अपने पास रखकर शेष ऊपर की इकाई को देंगें. परिवार के पारिवारिक तथा गांव के गांव संबंधी मामलों में बिना उसकी सहमति के राज्य कोई कानून नहीं बना सकेगा.

६. वर्तमान व्यवस्था में राज्य के पास ही पुलिस और सेना की भी सम्पूर्ण शक्ति है तथा आर्थिक शक्ति भी उसी के पास है. परिवर्तित व्यवस्था में एक स्वतंत्र अर्थपालिका होगी जो राज्य के नियंत्रण से अलग रहेगी.

७. वर्तमान व्यवस्था में शिक्षा की नीति बनाने का काम राज्य का है. परिवर्तित व्यवस्था में शिक्षा राज्य से बिल्कुल स्वतंत्र होगी.

इस प्रकार वर्तमान व्यवस्था में सुधार और व्यवस्था परिवर्तन बिल्कुल अलग अलग मुद्दे हैं. अबतक दुनिया में व्यवस्था परिवर्तन की पहल नहीं हुई है. व्यवस्था में सुधार के तो अनेक प्रयत्न जारी हैं. व्यवस्था परिवर्तन की पहल भारत से ही प्रारंभ हुई है. दुर्भाग्य है कि व्यवस्था में सुधार की आवाज़ उठाने वाले चाहे ना समझी में या जानबूझकर अपने काम को ही व्यवस्था परितर्वन कह देते हैं जो पूरी तरह गलत है.

श्रद्धांजलि

आदरांजली - श्रीरंगजी वरेरकर

- लीलाधर हेगडे

सोमवार दि. १७ दिसंबर के दिन श्रीरंगजी वरेरकर हमसे दूर हमेशा के लिए चले गये. दीर्घ बीमारी के बाद जीवन समाप्त हुआ. वरेरकरजी ९४ साल के थे. जीवन के अन्तिम दिनों में वे काफी थक गये थे. उठते समय, बैठते समय, चलते समय उन्हें दूसरों से मदद लेनी पड़ती थी. लेकिन स्मृति ठीक ठाक थी. पुराने दोस्तों को वे पहचानते थे.

श्रीरंगजी वरेरकर मालवण के. १९४२ का आंदोलन सुरु हुआ, उस समय वे मालवण के टोपीवाला हायस्कूल में ड्रॉईंग टीचर थे. लेकिन १९४२ के आंदोलन ने उन्हें पछाड दिया. उन्होंने विद्यालयको छोड दिया और १९४२ के आंदोलन में उन्होंने हिस्सा लिया. अच्युतरावजी पटवर्धन को उत्कृष्ट व्यवस्थापक की आवश्यकता थी. श्रीरंग के रूप में उन्हें मिल गया. वरेरकरजी बिल्कुल व्यवस्थित थे. टीपटाप (सफाई से) बोलनेवाले, अव्यवस्था उन्हें बर्दाश्त नहीं होती थी. सभी काम समयपर करने के लिए दौडधूप करते थे. इसीलिए अच्युतरावजी का और उनका जम गया. आंदोलन शांत होने के बाद ''मैंने ऐसा किया और मैंने वैसा किया, अच्युतरावजीको इस प्रकार बचाया'' आदि इस प्रकार की कभी डींगे नहीं हाँकी. मानो हम उस गाँव के ही नहीं. इस प्रकार उनका व्यवहार होता था.

आंदोलन शांत होने के बाद वरेरकरजीने सीधे सेवादल में प्रवेश किया. उनके जैसा सुचारु रूपसे कार्य करनेवाला आदमी सेवादल के कार्यालय में होना आवश्यक ही था. उस समय वे हमेशा के लिए सेवक बने. सेवादलके शिविर में, समारोह में गाना गाने लगे, औंध के शिविर में मेरी उनसे भेंट हुई. वहाँ वे कुछ दिन थे. यह शिविर १ मई १९४४ से १५ जून १९४४ याने डेढ़ महीने तक था. उन्होंने मुझे बगैर पेटी गाना किस प्रकार गाना चाहिए यह सिखाया. कई बार पेटी ना रहने से गाना बेसुरा होता था. मसलन राष्ट्रगीत नीचे के सुर में शुरु

ना करके उपर के सुर में शुरु करने से आखिर में सुर को चढाते समय गाना कितना बेसुर, होता है इसे हम जानते ही हैं. वरेरकरजीने मुझे कहा, गाने का सुर कितना ऊपर जा सकता है और कितना नीचे आ सकता है, इसकी जानकारी हमें होनी चाहिए. इस क्षेत्र में श्रीरंगजी वरेरकर मेरे गुरुवर्य थे. उनके जानेसे मेरा मार्गदर्शक खो गया है.

साने गुरुजीने १५ अगस्ट १९४८ के दिन साधना साप्ताहिक शुरु किया, उस समय वरेरकरजी गुरुजीके साथ थे जेकब सर्कल के पास ऑर्थर रोडपर १०-१२ फीट की जगह ली. वहाँ गुरुजी के साथ वरेरकरजी थे छपाई का सब काम वरेरकरजी देखते थे. वहाँ वसंतजी बापट, सदानंदजी वर्दे और मैं हमेशा जाते रहते साधना की व्यवस्था देखने के लिए. अनेक सेवादल के सैनिक भी वहाँ आते थे.

आगे चलकर वरेरकर जी को एअर इंडिया के छपाई, विभाग में काम मिला. वहाँ उन्होंने छपाई के क्षेत्र में कुशलता प्राप्त की. उनका फायदा समाजवादी आंदोलन को हुआ. साधना को, प्रजा समाजवादी दल को अथवा सेवा दल को कुछ छापने का रहा तो वरेरकर जी की सलाह ली जाती. वहाँ से सेवानिवृत्त होने के बाद वरेरकरजी पुणे में साधना के लिए काम करने लगे. वरेरकरजी निरंतर समाजवादी आंदोलन के बारे में सोचते रहते और जो जो उन्हें संभव होता था, उसे वे करते रहते थे.

साने गुरुजी जन्मशताब्दी के समय उन्होंने वसंतजी बापट से ''कोशिश करनेवाले बच्चों के साने गुरुजी'' इस पुस्तक को लिखकर लिया और उसका मूल्य १० रुपये ही होना चाहिए ऐसा आग्रह किया.

लातूर के भूकंप के बाद ''अपना घर'' शुरु किया. उस परियोजना के लिए वरेरकरजीने अपने मित्र मंडलियों को पत्र, लिखकर हजारों रुपये इकठ्ठे किये और ''अपना घर'' को भेज दिये सांताक्रुझ के साने गुरुजी आरोग्य मंदिर के लड़को को प्रोत्साहन देने के लिए उन्होंने बीस हजार रूपयों का चंदा तीन साल पूर्व दिया. उसके ब्याज से एस्.एस्.सी. में कामयाब होनेवाले छात्रों को पुरस्कार देने की योजना को प्रस्तुत किया. दो साल पहले वे घर में ही गिर गये और उनका स्वास्थ्य बिगडने लगा. अंततः वे हमसे विदा हुए.

अनुवाद - डॉ.विजया वारद - रागा
उदगीर -४१३५१७. मो.९८९०२९८९१५

(पृष्ठ १७ से...)

कुतूहलता मुझे बहुत ही आकर्षक लगती थी. आज तो ज्यादा ही लगती है. शिविर चलता था, उस खेत में एखाद खटियापर बैठे हुए, उस किसान से स्नेह संबंध रखनेवाले बंगसाहब मुझे विशेष रुप से याद आते हैं.

बंगसाहब का बडप्पन - महानता - बाद में समझती गई. सुलझती गई. उनका रहन-सन एकदम साधारण, स्वातंत्र्य आंदोलन, भूदान आंदोलन, संपूर्ण क्रांति आंदोलन और उसके बाद सर्वोदय के लिए अक्षरशः दौडधूप ! विनोबाजी ने जो किया उसी प्रकार खेती का, ग्रामस्वावलंबन के कठिन जीवन को स्वीकार कर, व्रतस्थता से करना, विनोबाजी, कुंमारप्पा, शुमाकर, इन गांधीवादी अर्थतज्ञों की बिरादरी के वे दूत थे ऐसा ही कहना होगा. देश सेवा के लिए जीते समय अपने गरीब परिवार के हाथ बँटने के लिए अपने पाँचों सुवर्ण पदकों को बेचनेवाले बंगसाहब, गाँधीजी की १९२१ को 'करो या मरो' की आवाज देने के बाद प्राध्यापक की स्थायी नौकरी छोडकर भूमिगत आंदोलन में उतरनेवाले, सक्तमजूरी की सजा को भोगनेवाले बंगसाहब, ''अर्थशास्त्र सीखना है तो अमरिका के बजाय भारत के देहातों में जाओ'' इस गांधीजी की सूचना को आज्ञा समझकर पासपोर्ट - व्हीसा को फाडकर बरगडी नाम के गाँव में नई दुल्हन अपनी पत्नी के साथ खेत में काम करते हुए अर्थशास्त्र जीनेवाले बंगसाहब और सुमनताई मुझे अद्‌भुत ध्येयनिष्ठ और आत्मबल के प्रतीक लगते हैं.

भूदान के आंदोलन के बंग साहब और सुमनताई ने पूर्णतया जी तोडकर काम किया. उनके पुत्र-अशोक और अभय तब छोटे ही थे. उन्हें रिश्तेदारों के यहाँ रखकर यह दंपत्ति भूदान आंदोलन में शामिल हुई. आगे सर्वोदय आंदोलन के राष्ट्रीय नेता, सभी सेवासंघों के महामंत्री और बाद में अध्यक्ष के रूप में स्वतंत्र भारत में गाँधी विचारों को अंकित करने का काम उत्साह से आगे ले गये.

प्रखर बुद्धिवादी और उतनीही श्रद्धा (यह श्रद्धा धर्म अथवा संप्रदाय के अर्थ से नहीं, मूल्योंपर की हुई श्रद्धा !) रखनेवाले बंगसाहबने हमारी पीढियों को प्रेरणा दी. किस तरह जीना चाहिए, इसका मार्ग दर्शाया. इस प्रकार के लोग अब कभी कभार मिलते हैं. हो सकता है अगली पीढियों को यह दंतकथा ही लगेगी. क्या मिला उन्हें इस भागदौड़ से ? ऐसा भी कोई कह सकता है. मुझे तो बस लगता है. दुनिया जीने जैसी है इन्हीं लोगों के कारण.

हिन्दी प्रस्तुति : विजया वारद

समाचार भारती -१

जयपुर शिविर का अहवाल

(राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा आयोजित - १९ मई से २५ मई २०१३ तक)

१७ मई २०१३ को सायं पांच बजे आंतर भारती औराद शहाजानी से लातूर के लिए प्रस्थान किया. रात्री दस बजे लातूर से ट्रेन द्वारा मुंबई के लिए यात्रा शुरु की. १८ की प्रातः मुम्बई पहुंचे जहाँ एक इंग्लिश स्कूल के हॉस्टेल में ठहरे. नाश्ता फिर भोजन करके मुम्बई के दर्शनीय स्थल - अरब समुद्र, श्मशान भूमि, सावरकर उद्यान, साने गुरुजी समाधी आदि देखकर रात्री नौ बजे स्टेशन पहुँचकर जयपुर के लिए ट्रेन पकड़ी.

१९ मई की दोपहर को जयपुर पहुंचे जहाँ श्री हजारीलाल जी हमें शिविरस्थल पर ले जाने आए हुए थे. वहाँ हमारा स्वागत हुआ और शाम को हम रैली में शामिल हुए. वापस आने के बाद भोजन कर विश्राम किया.

२० मई से शिविर की दिनचर्या शुरु हुई प्रातः प्रार्थना, प्राणायाम, व्यायाम के बाद दो किलोमिटर पर स्थित (हिंगोनिया के पास) एक तालाब की खुदाई के लिए श्रमदान करने गए. ८ बजे वापस आकर साढे दस बजे प्रथम सत्र शुरू हुआ. प्रथम कुछ समूह गीत बुलवाए गए. मणिपुर के शिविरार्थियों से 'मणिपुरी' सीखी. भोजन विश्रांति के उपरान्त २.३० बजे दूसरे सत्र में ग्रुपडिस्कशन हुआ. विषय था ''इस शिविर की सफलता के लिए आप क्या करेंगे?, बढता भ्रष्टाचार'' शाम को रैली निकाली गई. शाम के कार्यक्रम में कणकसर. गांव में श्रीमती लीलाताई भारद्वाज (गांव की सरपंच) तथा श्री पुष्पेन्द्रजी भारद्वाज तथा उनके भाई अभिषेक भारद्वाज उपस्थित थे. उनके भाषण के बाद विविध प्रान्तों का सांस्कृतिक कार्यक्रम विविध प्रान्तों से आए हुए शिविरार्थियों ने प्रस्तुत किया. शिविरार्थियों द्वारा १४ भाषाओं का 'भारत की सन्तान' नृत्य गीत प्रस्तुत किया. जिसे सबने बहुत पसन्द किया.

२१ मई प्रतिदिन की तरह श्रमदान नाश्ता के बाद प्रथम सत्र में भाई जी यानी श्री सुब्बारावजी ने देश तथा जीवन मूल्यों के बारे में मार्गदर्शन किया. तत्पश्चात् दस बारह ग्रुप बने प्रत्येक ग्रुप में अलग भाषा सिखाई गयी. हमने गुजराती सीखी. द्वितीय सत्र में ग्रुपचर्चा हुई. शाम को रैली निकाली गई. अपने अपने प्रान्तों की भाषाओं में नारे लगाते हुए हम चांदरिया ग्राम में पहुंचे. सरपंच श्री महेन्द्र यादव जी कार्यक्रम के लिए उपस्थित थे. सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा भाषण हुआ. जिसमें विविध प्रान्तों से आए शिविरार्थियों को जयपुर शहर के बारे

में जानकरी दी तथा वहाँ की महिलाएँ परदे में रहती हैं. शिविर में जयपुर के १९ शिविरार्थी में एक भी महिला नहीं थी. कार्यक्रम के अन्त में भाई जी का जयपुर की राजस्थानी पगड़ी पहनाकर स्वागत किया गया.

२२ तारिख को श्रमदान के बाद प्रथम सत्र की शुरुआत समूह गीत से हुई. शाम के सांस्कृतिक कार्यक्रम की तैयारी को समय दिया. फिर भाई जी ने श्रमदान का महत्व बताया. टेलन्ट एक्सचेन्ज खेल सिखाया. पाँच बजे ग्रुप चर्चा हुई. तत्पश्चात रेली द्वारा जोबनेर गांव में कार्यक्रम के लिए पहुंचे प्रमुख अतिथि श्री पंकज कुमार जहाला थे.

२३ ता. को प्रतिदिन की तरह श्रमदान भाषा की कक्षा ग्रुपडिस्कशन के बाद रैली द्वारा हिंगोलिया गांव में गए. सांस्कृतिक कार्यक्रम में श्री देवेन्द्र यादव, श्री सुरेश शर्मा उपस्थित रहे. निवास स्थान हॉस्टल में विशेष भोजन कराया गया.

२४ ता. को श्रमदान में वृक्ष लगाने के लिए गट्ढे किए तथा नाष्टा करके जयपुर दर्शन के लिए गए. जंतर मंतर, हवाई महल, ऐतिहासिक म्यूजियम देखा. लंच पेकेट साथ में थे. विष्णु मंदिर, दर्गा देखकर थोडी देर बाजार में शॉपिंग की. हॉस्टेल में वापस आकर भोजन उपरान्त मणिपुर के सर से अच्छी चर्चा व मार्गदर्शन लिया.

२५ ता. को अंतिम दिन भी श्रमदान किया और समापन कार्यक्रम दस बजे शुरु हुआ जिसमें हमारे निवास स्थान ''शहीद भगतसिंग कॉलेज हिंगोनिया विद्यापीठ की लड़कियां भी आईं और सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया. सब शिविरार्थियों को प्रमाणपत्र दिए जिसमें भारत की सन्तान - आन्तर भारती औराद शहाजानी को पहले प्रमाण पत्र दिए गए. नेपाल, महाराष्ट्र, दार्जिलिंग पंजाब गुजरात मणिपुर के शिविरार्थियों से विदा ली. हमें छोडने पुष्पेन्द्र भारतद्वाज जी का परिवार हजारीलाल जी आदि आए. हमने १ बजे की ट्रेन पकड़ी, भोजन के पेकेटस का ट्रेन में सेवन किया. अगले दिन मुम्बई १० बजे पहुंचे. स्टेशन पर नित्यकर्म करके सामान लगेज रूम में लॉक करके बम्बई शॉपिंग को निकले शाम को नौ बजे की ट्रेन से २७ मई की प्रातः लातूर पहुंचे और वहाँ से अपने अपने गांव गए.

कुल मिलाकर शिविर बहुत अच्छा रहा, शिविर की व्यवस्था उत्तम थी. अच्छे अनुभव आए. अपने देश के युवाओं के साथ रहने का अवसर मिला.

मराठी - कलशेट्टी शुभांगी राम हिन्दी प्रस्तुति - मधुश्री आर्य
मु.पो.कवठा, ता.उमरगा, (महा.).

'स्नेहालय' आयोजित

सह आयोजक : राष्ट्रीय युवा योजना एवं यूथ फार चेंज

युवा प्रेरणा शिविर

अहमदनगर

१५ अगस्त से १८ अगस्त २०१३

संपर्क : संदीप - (०९०१९०२६४७२) रोहित -(०९८५०१२८६७८)
अजित-(०९०१९०२०१७४) भारत-(००१९०२०१७६) गाविंद-(०९९२३७९६६६९)

विशेष सूचना

दि. १० मई २०१३ को आंतर भारती के विश्वस्तों ने यह निर्णय लिया है कि जून २०१३ के अंक से आंतर भारती (मासिक) व आंतर भारती की आजीवन (१५ वर्ष) सदस्यता शुल्क निम्न प्रकार होगा.

आन्तर भारती आजीवन सदस्यता (१५ वर्षों के लिए)	रु. १०००-००
आन्तर भारती वार्षिक शुल्क	रु. १००-००
आन्तर भारती एक अंक का मूल्य	रु. १०-००

कृपया नोट करें.

विश्वस्त - सचिव
आंतर भारती ट्रस्ट

अब अपनी रचनाएँ इस पते पर भेजें

डा.सी.जयशंकर बाबु
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग पांडीच्चेरी विश्वविद्यालय,
कालापेठ, पुद्दुच्चेरी - ६०५०१४
चलध्वनि संपर्क : ०९८४३५०८५०६
ईमेल-editorbabuji@gmail.com / वेबसाईट-www.yugmanas.blogspot.com

राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा आयोजित

आंतर भारती राष्ट्रीय बाल आनंद महोत्सव

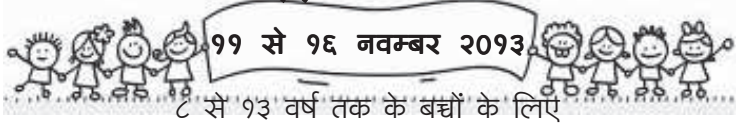

८ से १३ वर्ष तक के बच्चों के लिए
अपनी प्रतिभा को विकसित करने का मुक्त अवसर
परिवार निवास

वर्धा (महाराष्ट्र में)

पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण से रेल द्वारा पहुंचा जा सकता है

संपर्क

आशीष गोस्वामी (वर्धा) ०९४२२१४१२६२
राष्ट्रीय युवा योजना नई दिल्ली ०९८१०३५०४०४
नरेंद्र वडगावकर ०९८२५२७८४१२

स्थानीय स्तर पर
साक्री तालुका शिक्षण संस्था अंतर्गत
अक्टूबर २०१३ में

आंतर भारती बाल आनंद महोत्सव

संपर्क
जे.यू.नाना ठाकरे मो.०९४२३१९१९११

राष्ट्रीय युवा योजना के भावी शिविर

रष्ट्रीय एकात्मता युवा शांति शिविर

१६ से २२ सितम्बर २०१३ कलिम्पोंग (प.बंगाल)
संपर्क : **गौतम कलिकोतेय मो. ०९५६३४००००२२**